Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.7282, Volume 09, No. 02, April, 2019, pp. 143-146

सोशल मीडिया कितना सार्थक?

डॉ. अनुराधा पालीवाल*

i:Lrkouk

व्हाटस एप पर वायरल मैसेज से प्रभावित होकर भीड़ ने एक व्यक्ति को पीट पीटकर मार डाला……. ऐसी कई घटनाएं हम सोशल मीडिया के सम्बन्ध में सुनते हैं। धर्म की आड़ में होने वाले आड़म्बरों से भरे संदेशों को भेजकर अंधविश्वासों को फैलाना, निरर्थक व आधारहीन सूचनाओं को भेजकर समूह विशेष के लोगों में भ्रांति पैदा करना, किसी भी तथ्य का सच जाने बिना संदेशों को सोशल मीडिया पर प्रसारित करना, विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले इस तरह के वायरल संदेशों से होने वाले परिणामों से बेखबर ऐसे लोगों के लिए सोशल मीड़िया का प्रयोग किया जाना कितना सार्थक है? सोशल मीड़िया को भारत के अन्दर मनचाहा प्रयोग करने का साधन बना रक्खा है। एक नई आबादी जन्म ले रही है जो सोशल मीडिया पर स्वच्छंदता पूर्वक मेसेज, बोलने व लिखने में मशगूल है। उनके खिलाफ कोई एक्शन रिएक्शन किसी नियंत्रक संस्था के पास नजर नहीं आता है। यह बहुत ही हैरत में डालने वाली बात है कि एक व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता को स्वच्छंद रूप से प्रयोग करता जा रहा है और सरकारी नियंत्रण नहीं हो पा रहा। सोशल मीड़िया पर आने वाले मैसेज, वायरल वीडियो, राजनैतिक मैसेल वीडियो, अश्लील वीडियो, जनभावना को भड़काने वाले कार्यक्रम व संदेश और भी न जाने कितने अवैध, अनैतिक, तथ्यहीन मैसेज, चुटकले और अंधविश्वास की बातें सोशल मीड़िया पर चलने वाली एक सुनामी है जिसकी चपेट में यदा–कदा भोली–भाली जनता भी आ ही जाती है।

राजनीति, लोकतंत्र व मीडिया

मीडिया का दायित्व इस बात पर नजर रखना है कि सरकारें लोकतांत्रिक ढंग से जनता के हित में काम कर रही है या नही। बहुत से राजनीतिक दलों ने मीडिया मंचों और फैसबुकों, ट्विटर आदि पर अपनी प्रचार सामग्री के लिए कॉन्ट्रेक्ट किया हुआ है। राजनैतिक दल नेता स्वयं के खिलाफ आरोपों को छपने पर अंकुश लगाते हैं। राजनैतिक शक्ति का प्रचार प्रसार पर अधिक जोर देती है। उनका प्रचार अक्सर शुद्ध झूंठ या अर्धसत्य पर आधारित होता है। गौएबल्स का प्रसिद्ध कथन है – सौ बार दोहराने से झूंठ भी सच बन जाता है। प्रचार अधिक और काम करना कम हो गया है। पिछले कई सालों के दौरान मीडिया की स्वतंत्रता का लगातार क्षरण हुआ है। सजग, सचेत और आलोचनात्मक मीडिया के बिना स्वच्छ लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती। लोकतंत्र का प्रहरी संजग–सतर्क होना आवश्यक है।

सोशल मीडिया और अंधविश्वास

टी.वी. चैनल, सोशल मीडिया दोनों अंधविश्वास फैलाने के सशक्त माध्यम बन गए हैं। ये अंधविश्वास की जड़ों को मजबूत कर रहे हैं। मनचाही मुराद पूरी होगी। इस तरह के संदेश 10 लोगों को फारवर्ड करें। ऐसे संदेशों की सोशल मीडिया पर बाढ़ आई हुई है। 21वीं सदी में अंधविश्वास वैज्ञानिक सोच वाले लोगों के लिए चुनौती है। अंधविश्वास हमारी अज्ञानता, भय, निराशा और असफसेास की बात कि पढ़े लिखे लोग भी तर्क को ताक पर रखकर अंधविश्वास में जकड़ें होते हैं। अंधविश्वास व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के विकास में बाधक है। विज्ञान के युग में टी.वी. चैनलों पर सुरक्षा कवच, सिद्ध यंत्र, धन प्राप्ति यंत्रों वाले पर्स–चीजों को रखने से

---

* प्रवक्ता, आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, मालवीय नगर, अलवर, राजस्थान।

बाधाओं से मुक्ति देने वाले, उपाय बताने वाले साधु संतों का व्यापार धडल्ले से चलाया जा रहा है। सोशल मीडिया में ही कई तथाकथित वेबसाइट समस्या का समाधान करने का दावा करते हैं। मल्टीमीडिया, संचार के साधनों ने ही अंधविश्वास, जादू–टोना, भूतप्रेत, डायनों, तंत्र–मंत्र, टोटकों प्रपंच के टी.वी. नाटक चला रखे हैं। कहीं न कहीं प्रशासन भी इसके लिए दोषी है। इसमें मौजूद लोग ही धर्म के नाम पर अवैज्ञानिक नीतियों–रीतियों में शामिल है। यही कारण है कि सोशल मीडिया जैसे माध्यम से जहां वैज्ञानिक बदलाव आना चाहिए वही अंधविश्वास को अधिक प्रचार–प्रसार कर रहा है। फिर हम समाज की सोच में बदलाव कैसे ला सकते हैं। ऐसी स्थिति में परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी ही रहेगी। अंधविश्वास, पाखंड़ गंदी प्रथाओं, विकृत परम्पराओं और फलित ज्योतिष को बढ़ाने में सोशल मीडिया की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। अंधविश्वास का यह व्यापार राजनीतिक संरक्षण से और फल–फूल रहा है। अपने स्वार्थ के लिए इसका उपयोग कर राजनीति और मीडिया दोनों ही अपना गोरख धंधा चला रहे हैं।

सोशल मीडिया–उपयोगिता की सार्थकता

सोशल मीडिया सूचना का श्रेष्ठतम मार्ग का द्वार है जो पूरे विश्व में फैला हुआ है। यह विश्व में सर्वाधिक पूर्ण और सीखने का जटिल साधन है। इसके माध्यम से ज्ञान के विभिन्न संसाधन प्राप्त किए जा सकते हैं। केवल यही नहीं हम अन्य लोगों के साथ शीघ्र और प्रभावशाली ढंग से आदान–प्रदान (सम्प्रेषण) कर सकते हैं जो हमारे ही विषय में रूचि रखते हैं। जो लोग इंटरनेट अशिक्षित है वे पीछे रह जाएंगी चाहेंगे वह कोई भी क्षेत्र है। आज विश्वभर में इंटरनेट के कई मिलियन उपयोगकर्ता है और बढ़ रहे हैं। सही मायने में मीडिया को तभी समझा जाता है जब सोशल मीडिया का नाम लिया जाए तब तक तो मीडिया का अर्थ अधूरा लगता है।

सोशल साइट्स की लाइन में फेसबुक, ट्विटर, लिक्डइन, गुगल प्लस, यू– ट्यूब, वाट्सअप, ई–मेल, जी–मेल, याहू, रेडिफमेल, हॉटमेल, आर्कूट, इस्टाग्राम, हॉटस्टार, मैसेंजर ..... और भी न जाने कितने अन्य सोशल मीडिया की साइट्स चलन में है जिनके माध्यम से लोगों को सभी बातों की जानकारी एक ही टच में उपलब्ध हो जाती है। नवीन ज्ञान, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, विश्व की जानकारी, प्रकृति, भूगोल, पर्यावरण तथा ऐसी अनेकों जिज्ञासाएं जो मानव मन में उठती है उनकी जानकारी को प्राप्त करने के लिए सोशल मीडिया, इंटरनेट सभी कुछ आसानी से उपलब्ध कराकर कार्य को आसान कर देते हैं। मीडिया का यह बहुमूल्य सकारात्मक पक्ष है जिससे जिज्ञासु व्यक्ति की जिज्ञासा शांत हो जाती है। यदि हम कहे कि सोशल मीडिया ज्ञान–विज्ञान से लेकर विभिन्न क्षेत्रों की अधतन जानकारी को जानने समझाने में सशक्त माध्यम है तो काई दौराय नहीं है। विश्वव्यापी समस्याओं को सुदुर बैठे जानना उनसे अवगत होकर चिन्तन मनन से हल निकालने के साथ विचारों को जानने में भी सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है।

आर्थिक क्षेत्र में सोशल मीडिया की भागीदारी ने उपभोक्ता संस्कृति को और बढ़ाया है। विज्ञापन वस्तुओं की खरीददारी, प्रचार–प्रसार तथा ग्राहक की सुविधानुसार सामग्री व वस्तुओं की उपलब्धता ने उपभोक्ता संस्कृति में वृद्धि कर ऑनलाईन खरीददारी को त्वरित, उचित व सुरक्षित किया है। सामाजिक क्षेत्र में सोशल मीडिया की वजह से ही आज देश–विदेश बैठे लोगों से दैनिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कभी हम उनसे मिलने के लिए बरसों तरसते रहते थे उनसे सोशलमीडिया के कारण रोजाना बातचीत कर सकते हैं। सामाजिक जुड़ाव का यह अद्भुत व आसान तरीका सोशल मीडिया की उपलब्धता से ही संभव हो सका है। सभी सोशल साइट्स में फेस बुक (FB) सर्वाधिक प्रयोग की जाती है। 4 फरवरी, 2004 को लॉन्च की गई यह सोशल नेटवर्किंग साइट दुनियाभर में सर्वाधिक प्रयुक्त की जाती है। इससे अन्य सोशल साइट्स को बहुत पीछे छोड़ दिया है। आज दुनिभाभर में लगभग (3) तीन अरब से ज्यादा लोग सोशल साइट्स का उपयोग करते हैं। यह सबसे सस्ता, आसान व प्रभावी माध्यम हो गया है। इसने भौगोलिक दूरियों को भी कम कर दिया हैं 21वीं सदी में अत्याधुनिक तकनीक से परिपूर्ण दुनिया स्पष्ट दिखाई दे रही है। इस अत्याधुनिक तकनीक ने लोगों के दैनिक जीवन की जिंदगी व उनसे जुड़ी आदतें ही बदल दी है।

नई तकनीकों में गुगल से जुड़े यू–ट्यूब, फेसबुक, ऐंड्रॉयड फोन, किंडल तथा अन्य एप्पल के नवीन तकनीक से अपडेट मोबाइल फोन, मानव रोबोट आदि उपकरणों ने सूचना प्रौद्योगिकी में तत्काल त्वरित व चमत्कारिक बदलाव दिए जिनसे मानव जीवन तकनीक से लैस हो गया है। पिछले 50 सालों में विज्ञान की तकनीक ने आश्चर्यजनक प्रगति की है। कहॉ हम छोटी–सी बातचीत व ज्ञानार्जन के लिए परामुखापेक्षी बने रहते थे और आज एक स्पर्श मात्र से ही मीलों दूर बैठे व्यक्ति को देख व सुन पाते है। वहीं ज्ञान प्राप्ति हेतु निर्भरता भी समाप्त हो गई। आज इंटरनेट पर एक सर्च बटन दबाते ही संबंधित खोज हमारे सामने, हमारे हाथ में होती है। यह अनोखा परिवर्तन विज्ञान तकनीक के नवीनतम अविष्कारों से ही संभव हो पाया है। आज लगभग 4.5 अरब लोग इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं और भारत में 40 करोड़ लोग इसका इस्तेमाल करते हैं। डिजिटाइजेशन की तकनीक ने रोजमर्रा की जिंदगी को ही बदल डाला। इसे दुनिया की तीसरी औद्योगिक क्रांति के रूप में जाना जाता है। 1970 के दशक से मैकेनिकल और इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों को डिजिटल टैक्नोलॉजी बदलना प्रारंभ हो गया। इसके डिजिटल कम्प्यूअर व सेल्यूलर फोनों की भूमिका मुख्य रही। इसके कारण संचार सुविधा सरल व आसान होने के साथ सूचनाओं की जानकारी भी सामने आई। डिजिटाईजेशन ने लोगों व संस्थाओं से जुड़ी अनेकों अनेकों चीजों को बदल दिया। ऑन डिमाण्ड व्यक्ति, वस्तुओं की सेवाओं ने नई अवधारणा को जन्म दिया।

एनालॉग कम्प्यूटर से डिटिटल कम्प्यूटर की ही तरह प्रत्येक वो उपकरण व मशीन जिसे डिजिटल बनाया जा सकता था उसे इसने परिपूर्ण कर दिया। फिर चाहे वो सिनेमैटोग्राफी, रेडियो, टी.वी., कैमरा, मोबाइल, प्रिंटर, मैडिकल क्षेत्र के उपकरण आदि ही क्यों न हो सभी में बदलाव के साथ डिजिटाइजेशन ने प्रवेश कर लिया। इसी क्रम में अब अपनी क्षमता को बढ़ाने के लिए कम्पनियॉं SMAC (एसएमएसी) अर्थात् सोशल मीडिया, एनालिटिक्स, क्लाउड कम्प्यूटरिंग जैसी डिजिटल टैक्नॉलोजी को भी प्रमोट करेंगे। इस तरह से हम देखें तो तकनीक ने दुनिया के हर क्षेत्र में बड़े परिवर्तन कर दिए हैं और इंसान ने अपनी मेहनत, काबिलियत ज्ञान से बड़े पैमाने पर तरक्की की है। विश्व के देश तकनीक की प्रगति के चलते बहुत नजदीक है। मीडिया तकनीक की डिजिटल दुनिया में वैश्विक रूप से प्रगति हो रही है। इसमें रोजगार की अनेकों संभावनाएं छुपी हुई है।

इस प्रगति के साथ हम इसके दूसरे पहलू को देखें तो आज की युवा पीढ़ी सोशल मीडिया के सम्मोहन से स्वयं को मुक्त करने की अपेक्षा उसमें डुबी हुई है। इस सम्मोहन से युवा पीढ़ी में भटकाव नकारात्मकता, नफरत, विकृत मानसिकता, रिश्तों में दरार, अविश्वास, जीवन के प्रति लापरवाही, क्रूरता, तनाव, संवेदनहीनता जैसी तमाम विकृत परिस्थितियों व प्रवृतियों को पैदा किया है। भाषा का असंयमी, अमर्यादित प्रयोग ने भाषा शैली प्रयोग पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। इसने व्यक्ति की तामसी व राक्षसी प्रवृति को बढ़ावा दिया है। अभिव्यक्ति की आजादी ने आदमी को पतन के गर्त में पहुंचा दिया। भारत के गांव, शहर, नगर में सोशल मीडिया ने आमूलचूल परिवर्तन ला दिया और संस्कृति युक्त समाज को पतन की ओर धकेल दिया। गाँव चौपालों का सहज, जीवन विलुप्त प्रायः हो रहा है। धीरे–धीरे अंतिम सासें, गिन रहा है और वहां के युवा मोबाइल स्क्रीन पर सोशल साइट्स की सर्फिंग में मस्त और व्यस्त है। ग्रामीण लोक धुन, लोकगीत, लोक संस्कृति, सोशल साइट्स मीडिया के आगे सिसकते नजर आ रहे हैं।

चाहे तकनीक अपनी कितनी ही पीठ थपथपाले सच तो यही है कि हम आत्मा से दूर अपने से दूर, अपनों से दूर, दूसरों की जानकारी में चूर होकर एक आभासी दुनिया में जीवन बिता रहे हैं। जीवन का आनंद जीवन को जी कर नहीं ले रहे हैं मन से कहूं तो व्यक्ति–व्यक्ति के बीच शब्द, बातचीत अब जीवन का हिस्सा नहीं है सिर्फ टैक्स्ट रूप में संदेश टाइप किए जाते हैं जो बड़े सुन्दर दिखते हैं उनमें भावों का अभाव है। मैं मन से कहूं तो –

दूर से बर्फ सी सफेदी, बड़ी सुंदर दिखाई देती है।
पर रिश्तों की महक, पेड़ की छाया हथेली की बर्फ ही मन को ठंडाई देती है।

सोशल मीडिया के असर ने इंसान की मौलिकता नवीनता, सृजनात्मकता, संवेदनशीलता को खत्म किया है। सामाजिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक व साहित्य के क्षेत्र में एक छुपी हुई मौन टूटन दबे पांव चलती, आती हुई प्रतीत होती है जिसने मानवीय गुणों, संवेदनाओं को बहुत दूर छोड़ दिया है। सोशल मीडिया के प्रभाव से मॉब लिचिंग, सामूहिक दुष्कर्म, सामूहिक हिंसा, अमर्यादित भाषा, अंधविश्वास की पराकाष्ठा के दुष्प्रचार ने मानवीय सभ्यता व संस्कृति को झकझोर के रख दिया है। महज कुछ वर्षों में सोशल मीडिया ने भारतीय समाज को विभिन्न स्तरों पर पतन की ओर धकेला हैं हमारी भारतीय संस्कृति का तेज निढाल हो रहा है। मानव मूल्यों से लेकर सभी क्षेत्रों में पतन दृष्टिगत है। सोशल मीडिया को सबसे अधिक नुकसान अच्छी पुस्तकों के स्वाध्याय व पढ़ने की रूचि समाप्त होना है जो कि सोशल मीडिया से होने वाली हानि है। विद्यार्थी स्वाध्याय से दूर है। प्रत्येक वस्तु को इंटरनेट पर खोजने के कारण विस्मृति का शिकार है। युवा पीढ़ी रात दिन मोबाइल, गेम, मीडिया पर जागृत रहती है। दैनिक जीवन चक्र प्रभावित हो रहा है। अति कामुकता, लालसा, आकांक्षा, भौतिकता की अंधी दौड़, अज्ञानता व क्रूरता, उद्वेग को बढ़ाने में सोशल मीडिया ने आग में घी का काम किया है। व्यक्ति के शरीर की बिगडती जैविक घड़ी से शारीरिक व्याधियों ने जन्म ले लिया जिनसे विभिन्न दृष्टिजन्य रोग, रीढ़ की हड्डी संबंधी, मोटापे व स्मरण शक्ति, कमजोरी उच्च व निम्न रक्तचाप, मानसिक रोग जैसी बीमारियों हो रही है।

अराजकता फैलने से, जन भावना भड़कने से निर्दोष व्यक्ति की जान पर बन आने जैसे भयावह परिणामों से सोशल मीडिया पर वायरल तथ्यहीन मैसेज को रोकने के लिए कई सोशल साइट्स ने अपने सिस्टम में बदलाव किया है। राजनीति के तहत जनभावना भड़काने व पार्टीजन्य पक्ष–विपक्ष सम्बन्धी मैसेज पर भी सोशल साइट्स ने शिकंजा कसा है। कानूनी कार्यवाही के आदेश भी जारी किए गए हैं। इससे कहीं कुछ गलत को राकने में मदद भी मिल रही है। फिर भी सामाजिक उपयोग के लिए बनी इन सोशल साइट्स मीडिया का विवेकपूर्ण उपयोग ही हमारी मानवता का बेहतरीन उदाहरण हो सकता है। संस्कृति व सभ्यता को यदि बचाना है तो सोशल मीडिया का औचित्यपूर्ण उपयोग युवा पीढ़ी को बताना होगा उसके लाभ के साथ सकारात्मक पक्ष को मजबूत कर प्रशंसनीय कार्य करने के लिए प्रेरित करें व उसके नकारात्मक प्रयोग की भर्त्सना की जाए ऐसे लोगों के खिलाफ शिकायत हो, उनकी जांच की जावें तथा किसी भी कार्य में उनकी प्राथमिक रूप से गलती पर ही सबक, चेतावनी देकर उन्हें सतर्क कर दिया जाएगा तभी सोशल साइट्स के उपयोग की सार्थकता सिद्ध होगी अन्यथा एक खिलौने का मनचाहा प्रयोग इस कदर होगा कि स्वयं खेलने वाले और खिलौने दोनों की ही स्थिति दयनीय होने के साथ दुर्दशा की ओर ले जाएगी। समाज के एक जिम्मेदार व जागरूक नागरिक होने के नाते प्रत्येक वह व्यक्ति जो सोशल साइट्स पर सक्रिय है या सोशल मीडिया सक्रियता का लाभ लेता है उसे समाज की संस्कृति व मानवता के दायरे जानना अति आवश्यक है। जहां तकनीक, मीडिया, प्रगति करता है उससे समाज में परिवर्तन निश्चित होता है क्योंकि तकनीक प्रयोग में बदलाव छुपा रहता है। बेहतर हो कि यह बदलाव सुंदर रूप में सामने दिखे क्योंकि यह दोधारी तलवार है जिसमें जोखिम के साथ सुंदर संभावनाएं भी होती है। हमें जोखिम को चुनौती देते हुए सुंदर संभावनाओं को ही स्वीकार करना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- चौहान रीता, पी.डी. पाठक (2015–16) : बाल्यावस्था एवं उसका विकास, किशोरावस्था में सोशल मीडिया की भूमिका, पृ. 93, अग्रवाल पब्लिकेशन, दिल्ली
- शर्मा रीटा (डॉ.) (2017) : समसामयिक भारत और शिक्षा, इंटरनेट पृ. 299, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा
- सामान्य ज्ञान दर्पण : जनवरी 2019, सामयिक लेख, सोशल मीडिया का यथार्थ, पृ. 44–45, अखिलेश आर्येन्दु, प्रौद्योगिकी लेख. तकनीक ने बदल दी जिन्दगी पृ. 47 शशंका द्विवेदी
- गृहशोभा : अप्रैल प्रथम 2019 : विविधा जानलेवा बनता अंधविश्वास पृ. 66, पद्मा अग्रवाल

♦❐♦